विचार बिन्दु

जो एकांत में खुश रहता है वो या तो पशु है या देवता। –अज्ञात

शहरी हरियाली में मृत्यु दर घटाने का रहस्य छुपा है

यजुर्विद संहिता का एक सूत्र है:–**हरित्समुच्चयः शुभहेतुरेषः, स्वस्थंशरीरंमनसश्चशान्तिम्। विनाशयत्याशुगदांस्तथान्याः, सृजत्ययुंदीर्घमथोसमृद्धिम्॥** तात्पर्य यह है कि हरियाली का विस्तार शुभ का कारण है। यह शरीर को स्वस्थ बनाती है और मन को शांति प्रदान करती है। यह शीघ्र ही रोगों और अन्य कष्टों को नष्ट करती है और दीर्घायु तथा समृद्धि को उत्पन्न करती है। आज की चर्चा इसके वैज्ञानिक विश्लेषण पर है।

कभी आपने सोचा है कि हमारे आसपास के हरे-भरे पेड़, पार्क और हरियाली हमें कैसे जिंदा रख सकते हैं? यह कहानी एक ऐसे सफर की है जहां विज्ञान और प्रकृति के बीच की अनदेखी डोर ने मानव जीवन को न केवल लंबा किया है, बल्कि इसे शांत और स्वस्थ भी बनाया है। कल्पना कीजिए, एक ऐसा दिन जब शहरों में हरियाली का नामो-निशान मिट चुका हो। हर तरफ केवल कंक्रीट का जंगल, धूल-धुआं और बेचैनी। यही तो आधुनिक शहरीकरण की सच्चाई है, जहां हरियाली कम होती जा रही है। लेकिन विज्ञान ने हमें बताया है कि यह कहानी किसी त्रासदी की ओर बढ़ सकती है। शोध बताते हैं कि जो लोग हरियाली के पास रहते हैं, उनकी मृत्यु दर कम होती है। यह केवल एक आंकडा नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के बीच की कहानी है।

एक बूढ़ी महिला की कहानी लीजिए, जो शहरी कोलाहल में अपने घर की खिड़की से केवल कंक्रीट की इमारतें देखती है। वह अकेली रहती है, उसका स्वास्थ्य खराब है और वह अक्सर अस्पताल जाती है। लेकिन एक दिन, उसकी बेटी उसे एक ऐसे घर में ले जाती है, जहां खिड़की के बाहर एक बड़ा बगीचा है। कुछ महीनों में, उसकी मानसिक स्थिति में सुधार होता है, उसकी हृदय गति सामान्य हो जाती है और वह पहले से बेहतर महसूस करने लगती है। यह कहानी केवल भावनात्मक नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक है। अध्ययन बताते हैं कि हरियाली हृदय संबंधी बीमारियों, मानसिक तनाव और श्वसन तंत्र पर अद्भुत प्रभाव डालती है।

हरियाली का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह सामुदायिक स्तर पर भी लाभकारी है। ज़रा सोचिए, एक ऐसा इलाका जहां हरियाली की कमी हो, वहां अपराध दर अधिक होती है। लेकिन जैसे ही एक पार्क का निर्माण होता है, बच्चों के लिए खेलने की जगह मिलती है, वयस्कों के लिए टहलने के रास्ते बनते हैं, क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आने लगते हैं। यह केवल एक सामाजिक परिवर्तन नहीं है,बल्कि स्वास्थ्य और कल्याण का विस्तार है।

क्या हरियाली के बिना भी जीवन संभव है? वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो नहीं। चीन में एक अनोखा अध्ययन बताता है कि अत्यधिक ठंड या गर्मी से होने वाली मौतों को हरियाली नाटकीय रूप से कम कर सकती है। यह शोध स्पष्ट करता है कि हरियाली केवल सौंदर्य का स्त्रोत नहीं है, बल्कि यह जीवन रक्षक भी है। हरियाली केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति और दीर्घायु का आधार भी बन सकती है।

दक्षिण एशियाई देशों में हरियाली के महत्व को समझना और भी आवश्यक हो जाता है। शहरीकरण के कारण हरियाली के क्षेत्र सीमित हो गए हैं, जिससे शारीरिक गतिविधियों में कमी और संबंधित बीमारियों,जैसे मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप में वृद्धि हुई है। हरियाली को उपयोगी बनाने के लिए डिज़ाइन में सुधार आवश्यक है। उदाहरण के लिए, महिलाओं और बच्चों के लिए सुरक्षित और सुलभ पार्क बनाना,जहां वे बिना किसी डर के टहल सकें।

कम आय वाले और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए हरियाली का सकारात्मक प्रभाव अधिक होता है। गरीब और वंचित समुदाय, जिनके पास स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य संसाधनों तक सीमित पहुंच होती है, हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। यह न केवल स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने में मदद करता है, बल्कि सामाजिक समानता को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी साधन है।

क्या आप जानते हैं कि ब्लू स्पेस (जैसे तालाब, झील) का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव हो सकता है? ब्लू और ठीन स्पेस का सम्मिलित प्रभाव श्वसन और कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर को कम कर सकता है। शोध स्पष्ट करता है कि पानी और हरियाली के बीच का यह जुड़ाव हमारी सेहत के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

अब जरा एक छोटे लड़के की कल्पना करें, जो बड़े शहर में हरियाली के बिना पला-बढ़ा है। उसकी श्वसन समस्याएं बढ़ जाती हैं, और वह अक्सर अस्पताल जाता है। लेकिन जब वह एक गांव में अपने दादा-दादी के पास जाता है, जहां हर तरफ पेड़ और खेत हैं, तो उसका स्वास्थ्य बेहतर हो जाता है। यह सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि हकीकत है। अध्ययनों ने दिखाया है कि हरियाली केवल बीमारी को रोकने का साधन नहीं है, बल्कि यह पुनर्वास और उपचार का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकती है।

नीचे प्रस्तुत शोध के आंकड़े और उनके निष्कर्षों में हरियाली और स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर व्यापक और समठाविवरण देखा जा सकता है।

अल्फ़ानो और साथियों (Environmental Research: 216, 2023) ने 538 नमूनों पर अध्ययन किया। उन्होंने गर्भावस्था के दौरान माताओं के हरियाली के संपर्क का नवजात शिशुओं के डीएनए मिथाइलेशन पर प्रभाव देखा। 147 डिफरेंशियली मिथाइलेटेड क्षेत्र की पहचान की गई, जिनमें से 85 क्षेत्रों ने प्रदूषण, सड़क की दूरी, शहरीकरण और पड़ोस की आय जैसे कारकों के बावजूद भी महत्वपूर्ण परिणाम दिखाए। यह अध्ययन हरियाली और आनुवंशिक प्रभावों के बीच संबंध को रेखांकित करता है।

कामी-बर्नाल और साथियों (Health and Place: 82, 2023) ने हरियाली और टाइप-2 मधुमेह के बीच संबंध पर 13 कोहोर्ट अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 1,700 से 19,22,545 प्रतिभागी शामिल थे। उन्होंने पाया कि जिन व्यक्तियों को अधिक हरियाली का संपर्क मिला, उनमें टाइप-2 मधुमेह की घटनाएं कम थीं।

> **हरियाली का महत्व केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारे समाज और हमारे अस्तित्व का आधार है। यह हमें न केवल जिंदा रखती है, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। यह समय है कि हम इस ज्ञान को अपनाएं और अपने जीवन में हरियाली को स्थान दें। आखिरकार, यह केवल पेड़ों और पौधों की बात नहीं है; यह हमारे जीवन की बात है।**

डिमाकोपुलू और साथियों (Frontiers in Epidemiology, 3,2023) ने यूरोप के नौ देशों में 204 मिलियन व्यक्ति-वर्ष और 3.1 मिलियन मौतों के आंकड़ों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि पी.एम.2.5, नाइट्रोजन के ऑक्साइड और ब्लैक कार्बन के संपर्क से मृत्यु दर बढ़ती है, लेकिन हरियाली का उच्च स्तर इन नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है।

लियू और साथियों (Environmental Pollution, 301,2022) ने 53 अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 18 देशों के 100 मिलियन व्यक्ति शामिल थे। उनका मेटा-विश्लेषण दिखाता है कि एनडीवीआई (हरियाली का माप)में 0.1 की वृद्धि से कार्डियो वैस्कुलर मृत्यु दर में 2-3 प्रतिशत की कमी होती है।

अधिकारी और साथियों (The Lancet Planetary Health, 4, 135-136, 2020) ने दक्षिण एशिया के संदर्भ में हरियाली और स्वास्थ्य का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि शहरीकरण के कारण हरियाली की कमी मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों को बढ़ाती है। उन्होंने सुझाव दिया कि हरियाली के डिज़ाइन और उसकी उपलब्धता में सुधार के लिए नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है।

बर्ट्रैंड और साथियों (Public Health, 200:91-98, 2021) ने 13 एक्सपोजर-रिस्पॉन्स फंक्शन का उपयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि एनडीवीआई में 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर के जोखिम अनुपात को 0.96 तक कम कर सकती है।

कुआ और ली (Perspectives in Public Health,141: 342-353, 2021) ने 20 अध्ययनों (133,363 प्रतिभागी और 202 मिलियन व्यक्ति) का विश्लेषण किया और पाया कि हरियाली का अधिक संपर्क सामान्य मृत्यु दर को 3 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

झोउ और साथियों (Sustainable Cities and Society, 116,2024) ने 21 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि ब्लू और ग्रीन स्पेस का संयुक्त प्रभाव श्वसन और हृदय संबंधी मृत्यु दर को कम करता है।

ही और साथियों (Science of the Total Environment, 851, 2022) ने 138,749 स्ट्रोक से संबंधित मौतों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि हरियाली ने ठंड और गर्मी से संबंधित स्ट्रोक मृत्यु दर को कम किया। उच्च एनडीवीआई ने विशेष रूप से गर्मी के प्रभाव को कम करने में सहायता की।

रिगोलोन और साथियों (International Journal of Environmental Research and Public Health, 18: 1-29, 2021) ने 90 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि गरीब और वंचित समुदाय हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। हरियाली इन समुदायों में स्वास्थ्य असमानताओं को कम करती है।

रॉजस-रुएडा और साथियों (The Lancet Planetary Health, 3:469-477, 2019)ने 8.3 मिलियन प्रतिभागियों पर नौ अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि एनडीवीआई में 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर को 4 प्रतिशततक कम कर सकती है।

स्मिथ और साथियों (Cities, 119, 2021) ने ब्लू स्पेस के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए पाया कि ब्लू स्पेस का संपर्क मोटापे और सामान्य मृत्यु दर में सुधार करता है।

युआन और साथियों (Aging Clinical and Experimental Research, 33:1783-1797, 2021) ने बुजुर्ग व्यक्तियों पर हरियाली के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि हरियाली का संपर्क सामान्य और स्ट्रोक मृत्यु दर को कम करता है।

इसी प्रकार जरे सखाविदि इत्यादि (Science of the Total Environment, 838, 156180, 2022) द्वारा हरियाली और कैंसर के संबंध पर 18 अध्ययनों का मेटा-विश्लेषण बताता है कि फेफड़ों और अन्य प्रकार के कैंसर पर हरियाली के सकारात्मक प्रभाव के संकेत मिले।

इन शोधों ने हरियाली के व्यापक लाभों को दर्शाया है, जिसमें मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक असमानताओं को कम करने की क्षमता शामिल है। यह स्पष्ट है कि हरियाली मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

लेकिन हम इस ज्ञान का उपयोग कैसे कर सकते हैं? व्यक्तिगत स्तर पर,हम अपने आस-पास अधिक से अधिक पौधे लगा सकते हैं। पड़ोस के पार्क में नियमित रूप से समय बिताना हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। जैसा कि यजुर्विद संहिता में कहा गया है: **वनंप्रविश्यप्रचलन्ति ये ते, धृतिंलभन्तेहृदये सदा वै। तनुः सुदृढ्यामनसः प्रसादं, विधायसेव्यंशमयेत्व्यथाश्च॥** तात्पर्य यह है कि वन में प्रवेश करके जो लोग पैदल भ्रमण करते हैं, वे सदा अपने हृदय में स्थिरता (धैर्य और शक्ति) प्राप्त करते हैं। उनका शरीर सुदृढ़ होता है और मन प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार,वन को सेवन करते हुए (वन में नियमित भ्रमण करते हुए), शारीरिक और मानसिक दुखों और कष्टों को शांत किया जा सकता है।

बच्चों को प्रकृति के संपर्क में लाना, उन्हें पेड़ों और हरियाली के महत्व के बारे में सिखाना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रशासन के लिए यह जरूरी है कि हरियाली को शहरी योजना का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। पार्कों का निर्माण, सार्वजनिक स्थानों पर हरियाली बढ़ाना और ब्लू-ग्रीन स्पेस का प्रबंधन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। इसके साथ ही,सामाजिक असमानता को ध्यान में रखते हुए ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए, जो गरीब और वंचित समुदायों के लिए अधिक सुलभ हों।

हरियाली का महत्व केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारे समाज और हमारे अस्तित्व का आधार है। यह हमें न केवल जिंदा रखती है, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। यह समय है कि हम इस ज्ञान को अपनाएं और अपने जीवन में हरियाली को स्थान दें। आखिरकार, यह केवल पेड़ों और पौधों की बात नहीं है; यह हमारे जीवन की बात है। आइए, इसे संजोएं और संरक्षित करें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

सांस्कृतिक मूल्यों का सृजक : "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ"

डॉ. निमिषा गौड

जीवन में मूल्यों का अत्यंत महत्व है। मूल्यों के बिना जीवन दिशाहीन हो जाता है। मानवीय मूल्यों से युक्त समाज ही सशक्त, संगठित और वैभवशाली राष्ट्र की आधारशिला रख सकता है। जब समाज अपनी शक्ति और सामर्थ्य के बल पर खड़ा होता है, तब वह न केवल आत्मनिर्भर, बल्कि नैतिक रूप से भी समृद्ध होता है। सांस्कृतिक मूल्य वे आदर्श, मान्यताएँ, परंपराएँ और व्यवहार के तरीके होते हैं जो किसी समाज या समुदाय की संस्कृति का मूल आधार बनाते हैं। ये मूल्य पीढ़ी दर पीढ़ी परंपराओं, धार्मिक विश्वासों, नैतिक शिक्षाओं और सामाजिक अनुभवों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं।

हिंदू समाज की सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा और संगठन के उद्देश्य से100 वर्ष पहले 1925 में विजयादशमी के पावन अवसर पर डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्टीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। उस समय जब विदेशी आक्रांताओं और विभाजनकारी शक्तियों द्वारा हिंदू समाज की एकता को खंडित करने के प्रयास हो रहे थे, तब डॉ. हेडगेवार ने आत्मगौरव, अनुशासन और एकात्मता की भावना जगाने हेतु शाखा प्रणाली की शुरुआत की।

उन्होंने ऐसा तंत्र खड़ा किया जो राष्ट्रभक्ति, आत्मबल और सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में सहायक हो। संघ अपने प्रकार का विशिष्ट संगठन है, जिसकी तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती। इसलिए इसे केवल पढ़कर या सुनकर समझना कठिन है। संघ जो संगठन के रूप में दिखाई देता है, उसकी जो विचार सृष्टि है वह वस्तुतः शाश्वत भारतीय है।

यह विचार शुद्ध है, सत्य और स्थायी है। सत्य की प्रतिष्ठा तब ही संभव है जब उसके पीछे शक्ति खड़ी हो। विश्व-कल्याण और मानवता के उच्च विचारों के बावजूद भारतीय सनातन संस्कृति आक्रांताओं की शिकार बनी, क्योंकि समाज में शक्ति का अभाव था। इसलिए संघ ने समाज को सशक्त करने को अपना लक्ष्य बनाया। इसकी कार्यपद्धति का मूल है – व्यक्ति निर्माण। यह स्पष्ट है कि जब समाज का आचरण बदलता है, तो परिवेश स्वतः बदलता है। किंतु समाज का आचरण बदलने के लिए भी वातावरण का निर्माण करना पड़ता है, यही कार्य संघ करता है। संघ का मूल उद्देश्य है – हिंदू समाज को संगठित, संस्कारित और बलसंपन्न बनाना, जिससे वह मातृभूमि की रक्षा में समर्थ बन सके। उसका आदर्श वाक्य है–

–'**संघे शक्ति कलौयुगे**' अर्थात् इस कलियुग में शक्ति संगठन में निहित है और लक्ष्य है–'**परमवैभवं नेतुमेतत स्वराष्ट्र**' अर्थात इस राष्ट्र को परमवैभव सम्पन्न बनाना। जब समाज एक विचार, एक संकल्प और एक ध्येय से जुड़ता है, तभी एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।

संघ केवल विचार नहीं देता, वह उन्हें जीवन में उतारने पर बल देता है। जैसे शारीरिक बल के लिए व्यायाम आवश्यक है, वैसे ही मानसिक और सांस्कृतिक बल के लिए साधना भी जरूरी है, जो शाखा के माध्यम से होती है। शाखा का संचालन परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु मानकर किया जाता है, जो आत्मगौरव, समर्पण, त्याग, शौर्य और आदर्शों का प्रतीक है। संघ समय और समाज की आवश्यकता के अनुसार स्वयं को ढ़ालने और बदलाव का स्वागत करने वाला संगठन है। संगठन संरचना और शाखाओं के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है, किन्तु संघ के शाश्वत मूल्य आज भी अडिग हैं।

शाखाओं में प्रतिदिन स्वयंसेवक एकत्र होते हैं – शारीरिक अभ्यास, खेल, गीत, बौद्धिक चर्चा और समरसता के वातावरण में राष्टीय भावना को आत्मसात करते हैं। यह केवल संगठन नहीं, बल्कि संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला है। भारत की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने वाली शक्तियों में राष्टीय स्वयंसेवक संघ एक प्रभावशाली स्तंभ है। यह केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन है जिसने पीढ़ियों को राष्ट्रप्रेम, सेवा और भारतीय संस्कारों और शाश्वत जीवन मूल्यों से जोड़ा है।

संघ की मान्यता है कि किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान उसकी जीवन दृष्टि से बनती है, जो भाषा, भेष और सीमाओं से ऊपर उठकर एक समरस सांस्कृतिक समाज की कल्पना करती है। संघ की बैठकें, उत्सव, शाखाएँ और शिविर इस सांस्कृतिक परंपरा को जीवित रखने और नई पीढ़ी को उससे जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। मातृभूमि की रक्षा केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि क्रियात्मक होनी चाहिए। जैसे मंदिर की प्रतिमा की रक्षा संकट के समय आवश्यक होती है, वैसे ही राष्ट्र की रक्षा हेतु समाज को संगठित और सजग रहना चाहिए। संघ का स्वयंसेवक इस आदर्श को जीता है – वह केवल विचार नहीं करता, उसे आचरण में उतारता है।

संघ के स्वयंसेवकों के जीवन में भगवान परशुराम जैसे आदर्शों की प्रेरणा दिखाई देती है, जिन्होंने धर्म और पितृभक्ति की रक्षा के लिए कठोर संकल्प लिए। उसी प्रकार स्वयंसेवक मातृभूमि की सेवा और रक्षा को परम धर्म मानकर अपना जीवन समर्पित करता है। उसकी भक्ति शब्दों में नहीं, कर्म में प्रकट होती है। उसके जीवन आचरण से राष्ट्र प्रथम का भाव चरितार्थ होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मत है कि हिंदू समाज की एकता, आत्मबल और सांस्कृतिक गौरव ही भारत को पुनः विश्वगुरु बना सकते हैं। 'हिन्दू' वह है जो विविधता में एकता की संस्कृति पर विश्वास करता है, अपने पूर्वजों का गौरव करता है, इस धरती को माता मानता है और इसकी संस्कृति का उपासक है। संघ का उद्देश्य किसी राजनीतिक लाभ से नहीं, बल्कि समाज में राष्ट्रीय भाव के जागरण से जुड़ा है। यही कारण है कि वह प्रत्यक्ष राजनीति से दूर रहकर शिक्षा, सेवा, ग्राम विकास, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण आदि क्षेत्रों में कार्यरत है।

संघ के प्रतिवेदन 2024-25 के अनुसार देश भर में प्रतिदिन कुल 83,139 शाखाएं चल रही है। हर वर्ष लाखों युवा, विशेषकर 14-25 आयु वर्ग के संघ से जुड रहे हैं। संघ वेबसाइट के माध्यम से साल 2012 से अब तक 12,72,453 से अधिक लोगों ने संघ से जुडने में रुचि दिखाई है, जिनमें से 46 हजार से अधिक युवतियां एवं महिलाएं हैं। देशभर में कुल 89,706 सेवा गतिविधियां चल रही हैं, जिनमें से 40,920 शिक्षा के क्षेत्र में, 17,461 चिकित्सा सेवा से संबंधित, 10,779 स्वावलंबन के क्षेत्र में तथा 20,546 सामाजिक जागरण से संबंधित गतिविधियां हैं। संघ की प्रेरणा से अनेक संगठन समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। वनवासी क्षेत्रों से लेकर नगरों तक और शिक्षा से सेवा तक-संघ की प्रेरणा से सेवा भारती, विद्या भारती, संस्कार भारती, वनवासी कल्याण आश्रम जैसे अनेक संगठन समाजोत्थान में कार्यरत हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मात्र एक संगठन नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है, जो भारत की सनातन परंपरा को जीवित रखने, आत्मगौरव जगाने और भावी पीढ़ी को सशक्त व संस्कारित करने हेतु सतत प्रयत्नशील है।

–डॉ. निमिषा गौड,
सहायक आचार्य
कनोड़िया पी. जी. महिला
महाविधालय जयपुर।

सांवलिया सेठ के एक माह के भंडार व भेंट कक्ष से 26.77 करोड़ रुपए की आमद

- **131 किलो चांदी व 627 ग्राम 260 मिलीग्राम सोना भी प्राप्त हुआ**

मंडफिया, (निसं)। भगवान श्रीसांवलिया जी सेठ के दरबार में गत 26 मई को खोले गए भंडार की शेष रही राशि की गिनती अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं मंदिर की मुख्य निष्पादन अधिकारी प्रभा गौतम की उपस्थिति में पांचवें चरण में संपन्न हुई। मंदिर के प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर ने बताया शनिवार शाम को संपन्न हुई पांचवें चरण की गिनती से 5 लाख 38 हजार 496 रूपए की नगद प्राप्ति हुई। इससे पूर्व चार चरणों में हुई भंडार गिनती से 20 करोड़ 42 लाख 70 हजार रूपए नगद प्राप्त हुए थे। प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि इसके अलावा मंदिर कार्यालय में विभिन्न भक्तों ने विभिन्न स्थानों से ऑनलाइन व मनी ऑर्डर भेजकर एवं स्वयं उपस्थित होकर 6 करोड़ 29 लाख रूपए भेंट स्वरूप जमा किए। प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि पांचों चरणों की गिनती को मिलाकर भंडार से 20 करोड़ 45 लाख 08 हजार 496 रुपए नगद एवं मंदिर कार्यालय में 6 करोड़ 29 लाख रुपए भेंट जमा हुए हैं। इन सब को मिलाकर भगवान श्री सांवलिया जी सेठ के एक माह में 26 करोड़ 77 लाख 8 हजार 496 रूपए की कुल आमद हुई।

टेलर ने बताया कि भंडार से निकले सोने-चांदी एवं मंदिर कार्यालय में जमा सोने-चांदी का तोल भी किया गया, जिसमें भंडार से 388 ग्राम सोना व 57 किलो 700 ग्राम चांदी प्राप्त हुई एवं मंदिर कार्यालय से 239 ग्राम 400 मिलीग्राम सोना एवं 73 किलो 260 ग्राम चांदी भेंट स्वरूप प्राप्त हुई। भंडार गिनती में भादसोड़ा नायब तहसीलदार शिव शंकर पारीक, प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर, मंदिर प्रभारी राजेंद्र कुमार शर्मा, लेखाधिकारी राजेंद्र सिंह, संपदा प्रभारी भेरुगिरी गोस्वामी, लेहरी लाल गाडरी, जितेन्द्र त्रिपाठी सहित मंदिर एवं बैंक कर्मचारी उपस्थित थे।

भगवान श्रीसांवलिया जी सेठ के दरबार के भंडार की शेष रही राशि की गिनती मंदिर कर्मचारियों ने की।

बाल विवाह रुकवाया

पावटा, (निसं)। विराटनगर थाना क्षेत्र के मेड में बाल विवाह की सूचना मिलने पर प्रशासन ने बाल विवाह रुकवाकर परिजनों को पाबंद किया। जिला पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत ने जानकारी देते हुए बताया कि विराटनगर थाना क्षेत्र से एक नाबालिग ने सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट विराटनगर के समक्ष एक प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि आगामी चार जून को उसके माता-पिता नाबालिग अवस्था में उसकी शादी करवाना चाहते हैं। जिस पर सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट विराटनगर कुमार मोहन ने संज्ञान लेते हुए पुलिस थाना विराटनगर से मामले की जांच कर तथ्यात्मक रिपोर्ट मांगी। जांच में प्रार्थीया नाबालिग का विवाह तय होना पाया गया। जिस पर प्रार्थीया के माता-पिता, चाचा-चाची के विरुद्ध इस्तगासा अंतर्गत धारा (13)6 बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 में सिविल न्यायाधीश व न्यायिक मजिस्ट्रेट विराटनगर में पेश कर पाबंद करवाया। वहीं ग्राम पंचायत सरपंच को न्यायालय ने परिजनों द्वारा नाबालिग का विवाह बालिग होने तक नहीं करने के निर्देश दिए। नाबालिग को राजस्थान सरकार द्वारा संचालित बाल कल्याण समिति जयपुर में दाखिल कराया।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर रैली निकाली

भीलवाड़ा, (निसं)। विश्व तंबाकू निषेध दिवस-2025 के अवसर पर शनिवार को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से तंबाकू सेवन के दुष्परिणामों के प्रति जनजागरूकता फैलाने के उद्देश्य से एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। यह रैली महात्मा गांधी राजकीय जिला चिकित्सालय के मुख्य पोर्च से प्रारंभ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए तंबाकू के विरुद्ध जागरूकता का संदेश प्रसारित करती रही।

रैली को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सी. पी. गोस्वामी एवं पीएमओ डॉ. अरुण गौड़ ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। डॉ. गोस्वामी के नेतृत्व में आयोजित इस रैली में शहर के विभिन्न नर्सिंग संस्थानों के प्रशिक्षणार्थी एवं स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। प्रतिभागी हाथों में तंबाकू निषेध से संबंधित संदेशों वाले पोस्टर, बैनर व नारे लिए हुए थे, जिनके माध्यम से आमजन को तंबाकू सेवन से होने वाली बीमारियों जैसे कैंसर, हृदय रोग व श्वसन संबंधी समस्याओं के बारे मे जानकारी दी गई। इस अवसर पर सीएमएचओ डॉ. गोस्वामी ने बताया कि हर वर्ष 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य तंबाकू के सेवन को रोकना और इससे होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि तंबाकू का सेवन न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक जीवन पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने आमजन से आव्हान किया कि वे इस जनहितकारी अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए तंबाकू मुक्त समाज के निर्माण में योगदान दें।

राशिफल रविवार 1 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 9:36 तक, धुव्र योग प्रातः 9:11 तक, कौलव करण प्रातः 8:08 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 9:36 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 9:29 तक है। यमघट योग रात्रि 9:36 से सूर्योदय तक है। आज अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, जामित्री षष्टी, शीतला छठ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:19 से 9:01 तक, लाभ अमृत 9:01 से 12:24 तक, शुभ 2:06 से 3:48 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:12

मेष

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

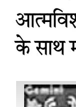

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यक्तिगत/पारिवारिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

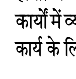

कर्क

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

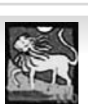

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

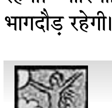

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आज महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। आज धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है।

तुला

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

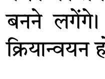

वृश्चिक

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बढ़ेगा।

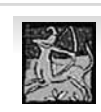

धनु

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब होने का भय है और बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि हो सकती है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

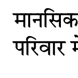

मीन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।